

Indu Kumari.

Assistant. Professor, Dept. of Economics, B. N. College, Bhagalpur,
T. M. Bhagalpur University, Bhagalpur,

B.A Part-2 (paper-3), Module-5

Keynes Theory of trade cycle

किन्स ने अपनी पुस्तक “रोजगार ब्याज तथा मुद्रा का सामान्य सिद्धांत” में आय, उत्पादन, तथा रोजगार के स्तर की व्याख्या की है, अर्थात् यह बताया है, कि किसी देश में आय तथा रोजगार कैसे घटते बढ़ते हैं इसी पुस्तक के अंतर्गत उन्होंने रोजगार के तथा आय के घटने बढ़ने के माध्यम से व्यापार - चक्र में आने वाले उतार-चढ़ाव की व्याख्या की है। इस पुस्तक में उन्होंने आय तथा रोजगार के निर्धारण की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत किए हैं, तथा इन्हें निर्धारण करने वाले तत्वों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किए हैं।

उनके अनुसार आय, उत्पादन, तथा रोजगार का स्तर समग्र मांग के स्तर पर निर्भर करता है समग्र मांग जितनी अधिक होगी आय उत्पादन तथा रोजगार का स्तर उतना ही ऊंचा होगा और समग्र मांग जितनी कम होगी आय, उत्पादन, तथा रोजगार का स्तर भी उतना ही कम होगा। समग्र मांग के घटने-बढ़ने से आय, उत्पादन तथा रोजगार में भी कमी या वृद्धि हो जाएगी, इसलिए आर्थिक उतार-चढ़ाव समग्र मांग के घटने बढ़ने के कारण होते हैं। समग्र मांग के गिर जाने से राष्ट्रीय आय उत्पादन तथा रोजगार घट जाएगी अतः अर्थव्यवस्था में मंदी की दशा उत्पन्न हो जाएगी और यदि समग्र मांग बहुत अधिक हो जाते हैं तो तेजी व मूल्य वृद्धि की दशाएं उत्पन्न हो जाती।

Aggregate demand = C+I, aggregate demand composed of demand for consumption goods and demand for investment goods .So aggregate demand depends on the total expenditure of the consumers on consumption goods and entrepreneurs on investment goods. propensity to consume be more or less stable in the short run, fluctuations in aggregate demand depends primary upon the fluctuation in investment demand. Keynes shows that the fundamental cause of fluctuations in aggregate demand and hence in fluctuation in economic activity is the fluctuation in investment demand. Investment demand is very unstable and volatile and brings about business cycle in the economy.

समग्र मांग उपभोग पदार्थों की कुल मांग तथा पूंजी पदार्थों की कुल मांग का जोड़ होता है इसीलिए समग्र मांग उपभोक्ताओं द्वारा उपभोक्ता पदार्थों पर किए गए कुल खर्च और उद्यमियों द्वारा पूंजी पदार्थों पर किए गए कुल निवेश संबंधी खर्च पर निर्भर करती है। केन्स के अनुसार उपभोग प्रवृत्ति अल्पकाल में लगभग स्थिर रहती है इसीलिए समग्र मांग का घटना बढ़ना निवेश मांग पर निर्भर करता है। निवेश पूंजी की सीमांत उत्पादकता (MEC) तथा ब्याज की दर (rate of interest) पर निर्भर करती है।

पूंजी की सीमांत क्षमता दो बातों पर निर्भर करती है पहला **प्रत्याशित लाभ की दर (Prospective yield)** तथा दूसरा **पूंजी पदार्थों की लागत (Supply Price of assets)** अल्पकाल में पूंजी पदार्थों की पूर्ति कीमत स्थिर रहती है। अतः भविष्य में लाभ प्राप्त करने की आशंसा ही पूंजी की सीमांत क्षमता का निर्धारण करती है। संभावनाएं या आशंसायेन मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों पर निर्भर करती है और इसलिए केन्स द्वारा प्रस्तुत की गई व्याख्या में मनोवैज्ञानिक तत्व भी शामिल है।

पूंजी की सीमांत क्षमता में ब्याज दर की तुलना में अधिक वृद्धि होने पर विनियोग की मात्रा बढ़ती है जिससे आय तथा रोजगार में वृद्धि होती है गुणक के प्रभाव के परिणामस्वरूप नए विनियोग की मात्रा में कई गुना अधिक आय में वृद्धि होती है। इससे तेजी अथवा विस्तार (Prosperity) का क्रम आरंभ होता है व्यापारियों में आशावादिता बढ़ती है और अर्थव्यवस्था अंततः तेजी की चोटी तक पहुंच जाती है।

तेजी की अवस्था में पहुंचने के बाद पूंजीगत पदार्थों में अधिकाधिक विनियोग की मांग के कारण उनकी पूर्ति कीमत अथवा लागत में वृद्धि होने लगती है पूंजी पदार्थों के उत्पादन में लाभ की संभावनाएं भी गिर जाती है। यह हम जानते हैं कि उपभोग प्रवृत्ति में उस अनुपात में वृद्धि नहीं होती जिस अनुपात में आय में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप तेजी के काल में अति उत्पादन की समस्या उत्पन्न होती है, और कीमतें गिरने लगती है सीमांत उत्पादन क्षमता और भी कम होती है। आशावादीता का स्थान निराशावादीता ले लेता है और सीमांत उत्पादन क्षमता अचानक अथवा एकदम गिर जाती है। परिणामस्वरूप निवेश में कमी होती है तथा तरलता अधिमान में वृद्धि होती है और ब्याज दर बढ़ जाती है इससे निवेश पर और भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस परिस्थितियों में तेजी की अवधि समाप्त हो जाती है और सुस्ती (Recession) अवस्था आरंभ होती है।

पूंजी की सीमांत क्षमता गिरने से निवेश में कमी होती है तो गुणांक प्रभाव विपरीत दिशा में क्रियाशील होता है। आय में जैसे-जैसे कमी होती जाती है तरलता अधिमान में वृद्धि के कारण ब्याज दर बढ़ती

जाती है। पूंजी की सीमांत क्षमता का ब्याज दर से कम होना विनियोग में और अधिक कमी उत्पन्न करता है। संकुचन क्रम आरंभ हो जाती है संकुचन अथवा मंदी अवधि इस बात पर निर्भर करती है कि तेजी काल में उत्पादन किए गए माल का कितना स्टॉप बचा हुआ है।

पुनरुत्थान के लिए निम्न बातें आवश्यक हैं **पूंजी की सीमांत क्षमता में वृद्धि हो** पूंजी की सीमांत क्षमता में गिरावट तो एकदम होती है परंतु उत्थान (recovery) में समय लगता है। इसमें कितना समय लेगा यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वर्तमान पूंजी परिसंपत्तियों की जीवन अवधि कितनी है, तथा इस बात की ओर भी ध्यान देना होगा कि **अतिरिक्त माल का स्टॉप समाप्त होने में कितना समय लगेगा** जैसे ही नई पूंजी परिसंपत्तियों की मांग की जाने लगेगी और पुराने स्टॉक समाप्त हो जाते हैं। भविष्य की संभावनाओं में सुधार होता है मंदी काल में बेरोजगारी के कारण साधनों की कीमतें गिरी हुई होती हैं इन परिस्थितियों पूंजी की सीमांत क्षमता में वृद्धि हो जाती है। निवेश बढ़ने से प्रभावपूर्ण मांग में पुनः वृद्धि होती है और कीमतें बढ़ने लगती हैं। तरलता अधिमान गिर जाता है ब्याज दर में कमी होती है आशावादी दृष्टिकोण विकसित होता है और आर्थिक क्रियाओं का स्तर क्रियाशील हो जाता है इस प्रकार पूंजी की सीमांत क्षमता में होने वाली परिवर्तन के परिणामस्वरूप विस्तार के बाद संकुचन और संकुचन के बाद विस्तार का चक्र चलता रहता है।

